International Journal of Applied Research 2016; 2(4): 382-387

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(4): 382-387
www.allresearchjournal.com
Received: 02-02-2016
Accepted: 05-03-2016

डॉ. अमिता
प्राध्यापक, मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

Correspondence
डॉ. अमिता
प्राध्यापक, मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

रामदरश मिश्र की कहानियों की रचनाप्रक्रिया

डॉ. अमिता

साहित्य की रचना जीवन के लिए होती है। वह हमारी अस्मिता की अभिव्यक्ति है। आज के इस वैज्ञानिक और भौतिक युग में हम बहुत सी चीजों का भण्डार लगाते जा रहे हैं। इस भौतिकवादी भण्डार में कई बार 'स्वयं' को अनुपस्थित पाते हैं अर्थात् हमारी अपने ही घर में मानवीय पहचान अस्पष्ट होती जा रही है। ऐसी विषम स्थितियों में साहित्य की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। विज्ञान का युग है यह बात सही है किन्तु विज्ञान और साहित्य दोनों ही जीवन के लिए जरूरी है। रामदरश मिश्र ने 'साहित्य का क्या होगा?' निबन्ध में इस विचार को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है – ''विज्ञान तथा साहित्य दोनों ही जीवन के लिए जरूरी हैं। साहित्य मनुष्य के रागात्मक जीवन की गहरी अभिव्यक्ति ही नहीं है, उसे और भी गहरा बनाता है। विज्ञान विश्लेषण है और साहित्य संश्लेषण। विज्ञान प्रकृति और जीवन का विश्लेषण कर कुछ सामान्य नियमों की खोज करता है, साहित्य व्यक्ति–विशेष या वस्तु–विशेष का संश्लिष्ट बिम्ब उपस्थित कर उसे शेष सृष्टि के साथ रागात्मक संबंध–सूत्रों से जोड़ता है। कहा गया है कि दोनों ही जीवन के लिए हैं और साहित्य तो पूरे जीवन की अभिव्यक्ति है, इसलिए उसमें विज्ञान के चिंतन–मनन का तो समावेश होता ही है – उसकी खोजों के परिणास्वरूप अस्तित्व में आये नये यथार्थ के साथ रागात्मक सम्बन्धों का विस्तार भी होता है। विज्ञान ने न केवल सुख–दुख मूलक नये पदार्थों की सृष्टि की है वरन् हमारी सोच समझ, अनुभव, संबंध और मूल चेतना को बहुत दूर तक प्रभावित किया है। बाहर से भीतर तक बहुत दूर तक बदला हुआ एक संसार दिखाई पड़ रहा है।'' [1] साहित्य जीवन की बहुविध अभिव्यक्ति करता है इसलिए जीवन के परिवर्तित इस यथार्थ को भी व्यक्त करता है। रामदरश जी इस मंतव्य को आगे स्पष्ट करते हुए कहते हैं ''वह विज्ञानमूलक या अध्यात्ममूलक समस्त चिंतन और प्रभाव को रागात्मक अनुभव के साहचर्य से ग्रहण करता चलता है और मनुष्य की रागात्मकता को समृद्ध करता हुआ जीवन–सम्बन्धी उसके सोच–विचार, समझ तथा चेतना को भी विकसित करता है। अन्य सामाजिक शास्त्र भी मनुष्य की सोच–समझ और चेतना को भी विकसित करते हैं किन्तु सिद्धान्त रूप में। साहित्य रागात्मक अनुभवों के बिंबों के माध्यम से यह कार्य करता है। इसलिए उसके द्वारा अभिव्यक्त सोच समझ और चेतना अधिक मूर्त्त और जीवन–सापेक्ष होकर उभरती है। जाहिर है कि साहित्य की अपनी एक विशिष्ट भूमिका है और उस भूमिका को विज्ञान छीन नहीं सकता।'' [2]

रामदरश मिश्र जी साहित्य के सम्बन्ध में एक चिन्ता से ग्रस्त हैं वह यह कि कृत्रिम यांत्रिक चीजों ने मनुष्य की रागात्मकता को कहीं न कहीं प्रभावित किया है और मनुष्य सहज प्राकृतिक जीवन से दूर अपने को यंत्रबद्ध करता जा रहा है। जीवन की सहजता को यह यांत्रिकता खत्म कर रही है और मनुष्य को सहज स्वाभाविक जीवन से दूर ले जा रही है। लेकिन रामदरश मिश्र को देखकर या आश्वस्ति होती है कि विकसित देशों में मनुष्य इस यांत्रिकता के विरूद्ध होकर सहज जीवन की ओर आ रहा है – ''मनुष्य जब तक मनुष्य रहेगा, उसकी मूलभूत पहचान उसकी उस रागात्मक सत्ता से होगी, जो उसक शेष सृष्टि के साथ एक कर देती है। यह रागात्मक सत्ता ही साहित्य का केन्द्रबिन्दु है। यह सत्ता ज्यों–ज्यों क्षीण और सतही होती जा रही है, त्यों–त्यों साहित्य का कार्य और भी चुनौतीपूर्ण बनता जा रहा है, उसका दायित्व बढ़ता जा रहा है।'' [3]

वस्तुतः रामदरश मिश्र विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के महत्त्व को नकारते नहीं हैं बल्कि वे उस दृष्टि के विरोधी हैं जो साहित्य को गलत दिशा में ले जा रही है। रामदरश मिश्र के शब्दों में – ''प्रश्न यह है कि क्या साहित्य समाज पर पड़ते हुए टेक्नोलॉजी के प्रभावों को भी आज का जीवन सत्य मानकर उसकी यथावत् अभिव्यक्ति करे और आधुनिक बनने का सुख लूटे या वह इन प्रभावों की पहचान करता हुआ भी इनके भीतर दबे मनुष्य के राग और मूल्य चेतना को पहचाने और केन्द्रीय सत्य के रूप में उन्हें अभिव्यक्त करे। मैं समझता हूँ कि दूसरा मार्ग ही सही मार्ग है और वही साहित्य की अपनी अस्मिता को बचाये रख सकता है। साहित्य को टेक्नोलॉजी नहीं, साहित्य की गलत समझ मार रही है और मारेगी। मेरा विश्वास है कि मनुष्य यंत्र बनकर नहीं जी सकता,

यांत्रिकता की चरम स्थिति आने पर उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया शुरू हो जाती है, विकसित देशों में शुरू भी हो गयी है। वहाँ की युवा पीढ़ी के तमाम लोग यांत्रिक जीवन का दबाव अस्वीकार कर सहज जीवन की खोज में भटक रहे हैं। अतः साहित्य की भूमिका समाप्त नहीं होने की। व्यवसाय–बुद्धि से आक्रांत और यांत्रिकता की ओर अन्मुख मानव–समाज को बार–बार सहजता की ओर प्रेरित करने का काम साहित्य करता रहेगा। वह उसकी इंसानियत जगाता रहेगा।'' [4]

साहित्यकार रामदरश मिश्र सर्जना को ही साहित्य का परम सत्य मानते हैं। मिश्र जी ने 'स्मृतियों के छंद 'संस्मरण पुस्तक में पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी से हुई बातचीत द्वारा इस तथ्य को रेखांकित किया है। रामदरश जी लिखते हैं – ''मैं सर्जनात्मक संबंध से पंडितजी के निकट पहुंचा था। पंडित जी बार–बार कहते थे, 'देखो कवि, साहित्य में सर्जनात्मकता ही परम सत्य है। आलोचना का सत्य दूसरे दर्जे का है, लेकिन दुनिया की चाल उलटी है, वह झूठ को या दूसरे दर्जे के सत्य को सबसे ऊपर मान लेती है' पहले तो मुझे लगा कि पंडित मुझे उत्साहित करने के लिए ऐसा कह रहे हैं, लेकिन जब उन्होंने बार–बार ऐसा कहा. ....तो लगा कि सचमुच ही सर्जनात्मकता ही सत्य है और सर्जनात्मकता ने ही पंडितजी के शोधक और आलोचक की एक नयी दीप्ति दी है, उनके पांडित्य को रस दिया है, अतीत–चिंतन को वर्तमान की दृष्टि दी है, सबसे ऊपर दिया है मानवीय जीवन सर्जना के प्रति अटूट विश्वास।'' [5]

इस प्रकार रामदरश मिश्र, पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी जी पर आधारित इस संस्मरण 'सर्जना ही बड़ा सत्य है' में द्विवेदी जी की दृष्टि से रचना और आलोचना के संदर्भ में इस सर्जनात्मकता का महत्त्व स्पष्ट करते है ''.....मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है। मनुष्य ही बड़ी चीज है, भाषा उसी की सेवा के लिए है। साहित्य सृष्टि का भी यही अर्थ है। जो साहित्य अपने आपके लिए रखा जाता है, उसकी क्या कीमत है – मैं नहीं कह सकता; परन्तु जो साहित्य मनुष्य समाज को रोग, शोक, दारिद्रय, अज्ञान तथा परमुखापेक्षिता से बचाकर उसमें आत्मबल का संचार करता है, वह निश्चय ही अक्षय निधि है।'' [6] मिश्र जी पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी के इस मंतव्य को अपनी सृजन यात्रा में पूरी निष्ठा से ग्रहण करते हैं। उनकी रचना प्रक्रिया में सृजन का यही सत्य रूप प्रकट होता है और मनुष्यता इस सृजन की पहचान होती है। रामदरश मिश्र जी मूलतः कवि हैं। वे कविता के साथ–साथ कहानी के क्षेत्र में आए। उनके अनुसार ''मैं कविता के साथ कहानी में आया तो मेरा तात्पर्य यह है कि कविता का जो भावात्मक जगत है उसकी अभिव्यक्ति तो मैं कविता के माध्यम से ही करता रहा किन्तु सामान्य जगत की सामान्य कथा (जिसे कविता नहीं व्यक्त करती) कहने के लिए मैंने कहानी का मार्ग अपनाया।'' [7] कहानी में एक कथा होती है जो अपने आस पास की किसी घटना, स्थिति अथवा जीवन की किसी सच्चाई से जुड़ी होती है। रामदरश मिश्र के अनुसार ''मैं जिस गाँव देहात में पैदा हुआ, पला–पुसा, प्रारम्भिक शिक्षा पायी, अभाव, दुख और संघर्ष के सधन अनुभवों से गुजरा वह गाँव देहात मुझे तरह–तरह से अपनी अभिव्यक्ति के लिए पीड़ित करता था। उसने यथार्थ की इतनी विपुल सम्पदा सौंपी थी कि उसकी अभिव्यक्ति एक विधा में अट नहीं पा रही थी। इसलिए मैं कविता लिखते–लिखते कहानी भी लिखने लगा।'' [8]

'इकसठ कहानियाँ' की भूमिका में मिश्र जी ने एक स्थान पर लिखा है ''मुझे अनुभव हुआ कि जो बात कहानी के माध्यम से कही जा सकती है वह कविता के माध्यम से नहीं। कविता कितनी भी सामान्य हो, आम हो, उसकी कुछ ऊँचाई बराबर बनी रहती है, जबकि कहानी अपने आस–पास को, गली कूचे–मुहल्ले को, रोजमर्रा की जिन्दगी के तमाम पदार्थों को समेटती है, आम आदमी की भाषा में बात करती है जो ठेठ सामाजिक यथार्थ है वह कविता के माध्यम से नहीं, कहानी के माध्यम से ही सही रूप में अभिव्यक्त हो सकता है।'' [9]

(क) जीवनानुभव और सौन्दर्यानुभवः

अपने छात्र जीवन में रामदरश मिश्र बनारस आने के बाद कुछ कहानीकार मित्रों के सम्पर्क में आए और कहानी लिखने की ओर उनका आकर्षण हुआ। बिड़ला छात्रावास में रहते हुए कवितायें सुनते–सुनाते वे अपने मित्रों की कहानियों भी सुरूचि पूर्वक सुनने लगे। 1948.49 वर्ष में छात्रावास संघ द्वारा प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसके निर्णायक हिन्दु विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष केशव प्रसाद मिश्र जी थे। इस कहानी प्रतियोगिता में रामदरश मिश्र की कहानी प्रथम आई। शायद मिश्र जी के छात्र जीवन का बी.ए. का वर्ष था। तत्पश्चात् शिक्षा अध्ययन के साथ ही शिवप्रसाद सिंह और विष्णुस्वरूप की कहानियों को भी वे लगन के साथ सुनने लगे। ये कहानीकार उस समय सुने जाते थे। इस प्रकार मिश्र जी सही मायने में 1952 के आसपास कहानी लेखन में प्रवृत्त हुए। 'मेरी कहानी रचना' में स्वयं मिश्र जी के अनुसार ''मेरा ख्याल है कि 'कह न सका' मेरी पहली महत्वपूर्ण कहानी थी जो एक महत्वपूर्ण पत्रिका 'संगम' (1953) में छपी थी। इसके बाद 'कहानी' पत्रिका में 'मनोज जी' (1954), 'भइया' (1954), 'बाढ' (1955) कहानियाँ प्रकाशित हुई। 'कल्पना' में 'लोचन (1954) कहानी छपी और उसके बाद उसी में सीमाएँ (1955), 'बदलियाँ' (1955); 'गाँव का बड़ा आदमी' (1957) कहानियाँ आयीं। इन्हीं दिनों 'गृहस्थी' (पाटल 1955), 'संध्या', (आज 1955), 'लवंगी' (नया पथ, 1955) 'बेसहारा' (त्रिपथगा, 1958) कहानियाँ छपीं।'' [10]

अनुभव उनकी कहानियों में मुख्य वस्तु है। सुरेन्द्र तिवारी के अनुसार ''मिश्र जी के अनुभव का दायरा बहुत विस्तृत है – गाँव से लेकर महानगर तक के जीवनानुभवों को उन्होंने अपने अन्दर समेटा है – और हर कहानी यह कहती है कि मैं कल्पना के पंख से नहीं अनुभव की गहराई से उभरी हूँ यहाँ जीवन, जीवन की सच्चाई है, उसे सही परिप्रेक्ष्य में देखने और समझने की दृष्टि है।'' [11]

अनुभव में उतरे सत्य को ही उन्होंने कहानियों में स्थान दिया है। ग्रामीण परिवेश में व्याप्त गरीबी, अभावग्रस्तता और जो इन विषम स्थितियों में लड़–लड़ कर जीने की इच्छा थी उसे रामदरश मिश्र ने अपनी कहानियों में अपनाया है। उनके अनुसार ''ग्रामीण परिवेश ने मुझे अपने भीतर स्थित रहने के स्थान पर बाहर से जुड़ने का गहरा संस्कार दिया, बाहर जो कुछ हो रहा है उसका अंग बनना या उससे गहरा सरोकार बनाएं रखना या उसके प्रति चिंतित होना ग्रामीण परिवेश से प्राप्त होता है। गाँव के जीवन में उस समय अफाट अभाव था, तकलीफ थी और अभावों से लड़–लड़कर जीने की इच्छा थी। उस जिजीविषा के फलस्वरूप ही लोग पर्व–त्यौहारों, मेला–हाटियों, शादी–ब्याह आदि उत्सवों में खाली हाथ, खाली जेब किन्तु उत्साह भरे मन से शरीक होते थे और सामाजिकता की लय से जुड़े हुए जीवन जीने की शक्ति पाते थे।'' [12] रामदरश मिश्र हर कहानी में अपनी जमीन से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। सुरेन्द्र तिवारी के शब्दों में ''अपने समाज, अपने परिवेश, अपने लोग अपनी मिट्टीकी मोहक सुगंध जहाँ रामदरश मिश्र की कहानियों में मिलती है वहीं सामाजिक समस्याओं से भी वे अपने को अछूते नहीं रखते। साम्प्रदायिकता, दंगे, जातिवाद आदि समस्याओं पर भी उनकी दृष्टि रही है।'' [13]

रामदरश मिश्र का सौन्दर्यानुभव ग्रामीण जीवन की प्रकृति से जुड़ा हुआ है। गरीबी और अभावों के बीच मनुष्य ऋतुओं, मौसमों, खेत खलिहानों और बाग–बगीचों से जीवन शक्ति पाता था। प्रकृति उसके नैराश्य को आशाओं में बदल देती थी। प्रकृति का एक दूसरा रूप भी था बाढ़ का जो हरियाली और सारी फसल को नष्ट कर देता था। किन्तु बाढ़ से नष्ट हुए जीवन से मनुष्य फिर

लड़ता था और फिर जीवन में हरियाली उगा लेता था। रामदरश मिश्र के अनुसार ''फुंकारने वाली प्रकृति फिर उसकी सहचरी हो उठती थी। मनुष्य उसके बीच उसी के साथ गाता था और भविष्य के नये सपने देखता था। मैं इस ग्राम जीवन का भोक्ता रहा हूँ। उसके सारे सुख–दुःख, रूप रंग भोगे हैं।'' [14]

रामदरश मिश्र जी अपनी जीवन यात्रा में गाँव से लेकर दिल्ली (वर्तमान में) जहाँ–जहाँ रहे वहाँ–वहाँ से अनुभव बटोरते रहे। परिवेश से प्राप्त अनुभवों को ही उन्होंने कहानियों का विषय बनाया है। केवल दर्शन के किसी सूत्र को लेकर अथवा किसी विचार को लेकर उन्होंने कहानियों को नहीं गढ़ा है बल्कि सामाजिक अनुभव के आधार पर कहानी को जन्म दिया है। विचार उनकी कहानी में सामाजिक अनुभव में रचबस कर प्रकट होता है। स्वंय उन्हीं के अनुसार ''मैं किसी नयी या पुरानी समस्या को मूर्तिमान करने के लिए कथानक का विन्यास नहीं करता बल्कि आस–पास अधबनी कथा को ही अपने ढंग से बनाकर उसके समस्या तक ले जाता हूँ। विचार का काम यह होता है कि वह देखे कि अमुक दृश्य या प्रसंग या चरित्र या संवेदना कहानी का विषय बनाने के योग्य है कि नहीं। यानी वह अपने आप में समाप्त हो जाने वाला तथ्य है या उससे किसी प्रभावपूर्ण सामाजिक सत्य की निर्मिति हो सकती है। उसमें सर्जनात्मकता की संभावनाएँ क्या हैं?'' [15]

रामदरश मिश्र ने अपनी कहानियों में अपने सामाजिक अनुभव में रचे बसे गाँव और शहर के ऐसे सन्दर्भों को और चरित्रों को उठाया है जो अभावों के भीतर से कुछ ऐसा मूल्य फेंकते हैं जो सामाजिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण होता है। इन स्थितियों और सन्दर्भों के कहीं वे प्रत्यक्ष रूप में सम्मिलित रहे हैं। और कहीं निकट प्रत्यक्ष द्रष्टा के रूप में रहे हैं। उनकी कहानियों में अनेक चरित्र ऐसे हैं जो उनके बिल्कुल आस–पास के ही हैं उन्हें हँसते–गाते, उठते–गिरते और भूख–प्यास से तपड़ते उन्होंने नजदीक से देखा है। ये पात्र कहानीकार के अन्तस को झकझोरते हैं। ये पात्र जीवन जगत के ही पात्र हैं मात्र कहानीकार की कल्पना की उपज नहीं है और ये पात्र सामाजिक यथार्थ को किसी महत्वपूर्ण समस्या को उद्घाटित कर पाठक को सोचने समझने के लिए मजबूर करते हैं। ये पात्र हमें भीतर तक हमारे अन्तर्जगत में जाकर हलचल मचा देते हैं।

रामदरश मिश्र की कहानियों में मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग ही अधिकांशतः दिखायी पड़ता है। मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग और इसके साथ निम्न वर्ग की समस्याओं को विश्वसनीयता और प्रामाणिकता के साथ कहानियों का विषय बनाया है। समकालीन परिवेश में राजनीति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था आदि के कारण कितनी विचित्र सामाजिक विकृतियाँ, विषमताएँ और विसंगतियाँ पैदा हो गई हैं ये विसंगतियाँ ही कहानियों का मुख्य विषय हैं। साम्प्रदायिक समस्या के यथार्थ को उन्होंने चित्रित किया है और उसे भड़काने वाले लोगों का असली चेहरा उघाड़ा है। सामान्य हिन्दू या मुसलमान अफवाहों के चक्रव्यूह में फंसकर ही अपने विवेक को खो देता है। प्रेम कहानियाँ मिश्र जी ने कम ही लिखी हैं। मिश्र जी ने प्रेम को स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों के साथ–साथ समाज के साथ जहाँ टकराता है वहाँ उसका रूप बड़ा प्रभावशाली बना दिया है। प्रारंभिक कहानियों में प्रेम कहानियाँ भी है जैसे 'संध्या', 'कह न सका', 'लाल हथेलियाँ', 'प्रतीक्षा', 'बदलियाँ', बाद की कहानियों में प्रेम, जीवन और समाज से जुड़कर सवाल बन जाता है।

वर्तमान जीवन में राजनीति एक सच्चाई है जिसे नकारा नहीं जा सकता। रामदरश जी ने अपनी कहानियों में राजनीतिक भ्रष्टाचार को बेनकाब किया है। इस दृष्टि से 'खण्डहर की आवाज', 'कहाँ जाओगे', 'गपशप', 'एक इन्टरव्यू उर्फ कहानी तीन शुतुरमुर्गों की उल्लेखनीय है। इन कहानियों में रामदरश जी ने संघर्षशील पात्रों के द्वारा विद्रोह के तेवर भी प्रकट किये हैं 'मुर्दा मैदान', 'सर्पदंश', 'इज्जत', जैसी कहानियों में राजनीतिक, सामाजिक अन्याय के खिलाफ विद्रोह का भाव विद्यमान है। गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव कहते हैं– ''पूंजीवादी सामंती गठजोड़ के शोषण ने आम जनता को बेबसी, सामाजिक असुरक्षा और भंयकर आर्थिक संकट की अंधेरी गलियों में भटकने के लिए मजबूर कर दिया.....'समाजवाद' और 'गरीबी हटाओ' जैसे खोखले नारों के प्रति आम जनता का मोह भंग भी हुआ है। आम जनता के इस मोहभंग को रामदरश जी ने अपनी कहानियों में प्रतिबिम्बित किया है।'' [16]

'एक वह' में ताऊ समाजवाद का अर्थ समझने लगा है यह समाजवाद गरीबों की गरीबी मिटाने के लिए नहीं बल्कि नेताओं, सेठों और अफसरों की तिजोरियाँ भरने के लिए है।

डॉ. आनन्द प्रकाश के शब्दों में ''इन कहानियों में आज की व्यावसायिक कहानियों जैसी धुंधली जीवन दृष्टि उलझाव, व्यक्तिवादिता, विवेकहीनता के स्थान पर सामाजिक सच्चाइयों के प्रति ज्यादातर सही दृष्टिकोण, अपने परिवेश की गहरी पहचान घटनारूप पात्र चयन एवं सही किस्म की संवाद शैली अपनाई गई है ताकि आजादी के बाद के नये माहौल को सही अभिव्यक्ति दी जा सके। 'एक वह','पराया शहर' इस संग्रह की सर्वाधिक प्रभावी कहानियाँ है जिनमें प्रगतिशील लेखकीय स्वर, यथार्थ की भंगिमाओं का आलेखन गाँव और शहर दोनों के परिप्रेक्ष्य में करता है। 'सड़क' और 'जमीन' कहानी गाँव की भ्रष्ट राजनीतिक जिन्दगी की व्यथा कथा कहती है, जो 'आधुनिक' कहानी गाँव के मशीनीकरण की। 'दूरियाँ' कहानी बदलते नाते–रिश्तों की पहचान उभारती है। 'मिसफिट', 'सम्बन्ध', 'निर्णयों के बीच निर्णय', एवं 'उत्सव' कहानियों में लेखकीय रुख शहर के प्रति कुछ रूखा लगता है और लेखक व्यंग्यात्मक रवैया अपनाता हुआ कार्टून से बनाता दृष्टिगत होता है। 'मिसफिट' कहानी में लेखक यदि प्राइवेट स्कूलों के आर्थिक एवं शोषक पक्ष की ओर ध्यान देता तो कुछ और ही स्थिति उभरती ।'' [17]

रामदरश जी के अनुभवों का दायरा अपरिमित और व्यापक है। रामदरश जी अनुभवों को हू–ब–हू रचना में उतारते ही नहीं बल्कि उसे और अधिक सघन व जीवंत बना देते हैं। कहानी पाठक को आकर्षित करती चली जाती है। वे अनुभव के यथार्थ को रचना में उतारते हुए एक तटस्थता भी बरतते हैं और एक निकटता भी। इस दृष्टि से 'सीमा', 'दिनचर्या', 'अतीत का विष', 'आखिरी चिट्ठी', 'पशुओं के बीच', 'सवाल के सामने ऐसी ही कहानियाँ हैं।

मिश्र जी की कहानियों के केन्द्र में मुख्यतः गाँव ही हैं वे कस्बे, नगर और महानगर में भी आए हैं और कस्बे, नगर और महानगर से भी उन्होंने अनुभव बटोरे हैं किन्तु गाँव के सघन अनुभव जितने प्रभावशाली बन पड़े उतने नगर, महानगर के नहीं। रामदरश जी के अनुसार ''मैंने गाँव को बचपन में आर–पार जिया है उसके हर क्रिया व्यापार का मैं अंग रहा हूँ मेरे मूलभूत इन्द्रियबोध आदमी की पहचान प्रकृति की कोमल–पुरुष छवि और स्वयं की गहरी भूख प्यास के बिम्ब वहीं बने हैं और इस देश की पहचान के केन्द्र में भी गांव ही हैं। अतः देश और समाज की समस्या के कारण भी और अपने अनुभवों के कारण भी बार–बार गाँव से अपनी कहानियाँ लेता रहा हूँ''। [18]

इस प्रकार रामदरश जी की कहानी लेखन के पीछे उनका जाना पहचाना परिवेश ही है जहाँ से वो निरन्तर सृजन की प्रेरणा लेते रहे हैं। डॉ. सूर्यदीन यादव शब्दों में ''उनके साहित्य सृजन में परिवेश का अधिक योगदान रहा है किन्तु उस साहित्य निर्माण में उनकी अभावमय घरेलू एवं सामाजिक स्थिति की प्रवृत्ति को कम श्रेय नहीं है। भले ही पारिवारिक अभाव कष्टप्रद रहे हों किन्तु उन अभावों ने जो मूल्यवान मानवीय अनुभव दिया, वह सम्पन्नता में शायद ही मिल पाता।'' [19] अपने समय की सच्चाई को इन कहानियों में दायित्वपूर्ण ढंग से निरूपित किया है। डॉ. गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव के अनुसार ''रचनाकार का यह दायित्व होता है कि समय की वास्तविकता को आत्मसात करे और उसे एक सर्जनात्मक अभिव्यक्ति दे। तभी उसकी रचना महत्त्वपूर्ण और

जीवंत हो सकेगी क्योंकि रचना जब अपने समय से संगति खो देती है तो वह महत्त्वहीन, तापहीन और अप्रभावी हो जाती है..... रामदरश मिश्र जी की पक्षधरता की चेतना 'खाली घर' के बाद के कहानी संग्रहों में विकसित होते दिखाई पड़ती है। निम्नवर्ग की असहायता, विवशता और असुरक्षित जिन्दगी को उन्होंने करीब से देखा है और उसे गहराई से अपनी कहानियों में उतारा है।'' [20]

रामदरश मिश्र ने अपनी कहानियों में गाँव के टूटते हुए स्वरूप का यथार्थ चित्रण किया है। रोजी–रोटी के लिए दूर जाने वाले लोग गाँव से कटते जा रहे हैं। डॉ. गिरीश चन्द श्रीवास्तव के अनुसार ''स्वातन्त्र्योत्तर भारत की वास्तविकता है कि गाँवों के लोग शहरों में बस जाने के कारण शहर में बसते जा रहे हैं। यह एक वास्तविकता है कि वे गाँव से कटने के दर्द से पीड़ित भी है। परन्तु उनका यह दर्द रोमानी नहीं है। यह दर्द अपनी गतिशील जीवन धारा के मूल स्रोत से कटने का दर्द है जो एक कटु वास्तविकता है और जिसे रामदरश मिश्र जैसे ग्राम संवेदना के धनी रचनाकार ही सशक्त अभिव्यक्ति दे सकते थे।'' [21]

अमृतराय ने भी 'विकल्प पत्रिका में लिखा है ''आधुनिक हो या पुराना सच्चा लेखक वही है जिसमें लेखक देखे हुए अपने भोगे हुए को अपने कलात्मक सामर्थ्य भर अधिक–से–अधिक पूर्णता के साथ चित्रित करता है।'' [22] वस्तुतः रामदरश मिश्र की ये कहानियाँ हमारी अपनी ही जान पड़ती है। जैसे–जैसे हम कहानियों को पढ़ते जाते हैं लगता है जैसे अपना ही अनुभव संसार प्रकट हो रहा है।

डॉ. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव के शब्दों में ''रामदरश जी की कहानियों से गुजरना एक अनुभव संसार से गुजरना है। उनकी कहानियों में एक चिर–परिचित जाना बुझा संसार देखने को मिलता है। जीवन का यथार्थ एक संश्लिष्ट अनुभव है जिसे एक समर्थ लेखक उसके पूरे अन्तर्विरोधों के साथ प्रस्तुत करता है।'' [23] स्वयं रामदरश मिश्र अनुभव की सघनता पर बल देते हुए 'सारिका' में लिखते हैं– ''साहित्यकार के लिए कोई भी जमीन या कोई भी प्रदेश वर्जित नहीं है। सवाल इतना है कि उस जमीन के साथ हमारा अनुभवात्मक सम्बन्ध कितना गहरा है।'' [24]

विविधता और व्यापकता की दृष्टि से कहा जा सकता है कि रामदरश मिश्र की कहानियों में जीवन के अनुभव विभिन्न रूपों का परिचय कराते हुए विश्वसनीय एवं प्रामाणिक लगते हैं डॉ. विनय का यह निम्न कथन बहुत सटीक है ''कहानियों में अनुभव का वैविध्य अनेक स्तरों पर मिलता है। सबसे मूल बात यह है कि चाहे संघर्ष का स्वर हो, विद्रोह और आक्रोश की मानसिकता हो किसी बिगड़े हुए को बनाने की ललक हो या मानवीय सम्बन्धों में आये हुए अंतरालों को भरने की यातना हो–अनुभव का घनत्व इन कहानियों की सबसे बड़ी शक्ति है। इन कहानियों की एक विशेषता की ओर मैं विशेष रूप से ध्यान दिलाना चाहूंगा कि ये सहज और रची हुई कहानियाँ हैं, मिश्र जी के पूरे लेखन का मूल केन्द्र करूणा का प्रसार है। इस करूणा के अंतर्गत ये जीवन को बहुत व्यापक रूप से देखते है अर्थात् शोषित व्यक्ति की दुरअवस्था और शोषक के विस्तारित अहम् दोनों के चित्र में मूल करुणा होता है।'' [25]

(ख) बौद्धिक एवं वैचारिक आधार

कहानी के क्षेत्र में कई आन्दोलन प्रारम्भ होकर खत्म हो गए थे। 'नयी कहानी' का आन्दोलन लगभग समाप्त हो चुका था। 'अकहानी', 'सचेतन कहानी' आदि की चर्चा होने लगी थी। रामदरश मिश्र जी किसी कहानी आन्दोलन में शरीक नहीं हुए थे। 'नयी कहानी' के आन्दोलन के समाप्त हो जाने के बाद भी अच्छी कहानियाँ आती रहीं। नए कहानीकार चर्चित हो गए थे। मिश्र जी की कहानियाँ भी ऐसे समय आयीं। यद्यपि ये कहानियाँ भी 'नई कहानी' के क्षेत्र की हैं। आन्दोलनों की मिश्र जी ने कभी चिन्ता नहीं की। रामदरश मिश्र के शब्दों में ''1969 में प्रकाशित मेरे कहानी संग्रह 'खाली घर' की कहानियों को चर्चा के लिए किसी आन्दोलन का बल नहीं मिला। किन्तु इससे क्या होता है, मैं अपने अनुभव, जीवन दृष्टि और परिवर्तित जीवन यथार्थ को लेकर कहानियाँ लिखता रहा। वे पत्रिकाओं में छपती रहीं। यह क्रम आज तक चल रहा है। मुझे कभी आन्दोलनों ने नहीं ललचाया मैं अपने विकास मान अनुभवों, समझ और परिवेश जीवन पर भरोसा कर धीरे–धीरे चलता रहा।'' [26]

मिश्र जी ने मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद और मनोविश्लेषणवाद जैसे दर्शन के गंभीर फारमूलों से कहानी को रूप नहीं दिया। जीवन में जो घटित हो रहा है, उसे अपनी दृष्टि से देखना और पहचान कर फिर अपनी रचना में उतार देना ही उन्हें प्रिय रहा है। जीवन को पहचान ने और समझने की दृष्टि दर्शन हो सकते हैं। उन्होंने एक स्थान पर कहा है – ''मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद और मनोविश्लेषणवाद के फारमूलों से कहानी या कोई रचना गढ़ना आसान होता है और हिन्दी की खानाबद्ध आलोचना की दृष्टि में उतरने के लिए सुविधाजनक भी। किन्तु मैं इसे रचना का प्रकृत मार्ग नहीं मानता। मैं इन दर्शनों या विचारों को जीवन को पहचानने की दृष्टि मात्र मानता हूँ स्वयं जीवन नहीं। दृष्टि भी जीवन अनुभव के साथ ही रचना के लिए काम की होती है जैसे अनुभव दृष्टि। मैंने अपने परिवेश में अभिशप्तों को देखा है, काफी दूर तक उनके साथ जिया है और अभिशप्त जिन्दगी के भीतर से उठते उनके विद्रोही तेवर को भी देखा है या उन्हें एक जीवनवादी दृष्टि के साथ अपनी पीड़ा को हँस कर झेलते देखा है।'' [27]

मिश्र जी ने मार्क्सवाद और मनोविश्लेषवाद के किसी विचार को जहाँ पात्र के स्वभाव से मेल खाता था वहाँ उगा दिया और वहाँ वह विकसित होता गया। स्वतंत्रता के बाद जो विद्रोही स्वर है वह भी उनकी कहानियों में कहीं–कहीं दिखायी पड़ता है। 'सर्पदंश' कहानी में गोकुल का बेटा शोषक साँपों को कुचलने के लिए संगठन की सहायता लेने के लिए दूसरे गाँव की और दौड़ता है। 'मुक्ति' कहानी की चंदा व्यक्तित्व घोटू पारिवारिक जीवन को छोड़कर किसी के साथ भाग जाती है। 'एक औरत एक जिन्दगी' की भवानी जीवन की जीर्ण शीर्ण रूढ़ियों के गलाजत के विरूद्ध खड़ी हो जाती है। ये पात्र अपनी स्थितियों और अभावों के विरूद्ध लड़ते हैं किन्तु इस लड़ाई का रूप सहज जीवन से घुल मिलकर प्रकट होता है। ये पात्र अभावों के बीच से ही एक जीवन दृष्टि विकसित कर जीवन जीने का रास्ता ढूंढ निकालते है।

(ग) भाषा का संस्कारः

मिश्र जी की कहानियों में आम व्यक्ति का दुख दर्द है इसलिए भाषा भी सामान्य व्यक्ति के निकट जान पड़ती है। उसमें कोई दुर्बोधता नहीं बल्कि ऐसी सहजता है जो मर्म को छू लेती है। भाषा और शिल्प दोनों दृष्टियों से मिश्र जी की कहानियाँ सहज हैं उनमें कोई कृत्रिमता नहीं। सुरेन्द्र तिवारी के शब्दों में ''रामदरश मिश्र की कहानियों से गुजरने के बाद यह संतोष मिलता है कि हमने अपने आस–पास के कुछ लोगों से साक्षात्कार किया है। बिना किसी शिल्पगत उलझाव के या भाषाई चमत्कार के लेखक अपनी बात अपने चरित्रों को हमारे सामने रख देता है।'' [28] मिश्र जी ने अपनी कहानियों में कहीं कहीं कल्पना का आश्रय भी लिया है जो विश्वसनीयता के निकट है। कल्पना यथार्थ से कही हुई नहीं प्रतीत होती। जिज्ञासा कौतुहल एवं रोचकता से परिपूर्ण मिश्र जी की कहानियाँ पात्रानुकूल भाषा का गुण समाहित किए रहती हैं। कछार अंचल के पर्वों, उत्सवों, मेलों की भाषा जीवंतता धारण किए हुए है। पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' के अनुसार – ''मिश्र जी की कहानियाँ उत्तम पुरुष और अन्य पुरुष दोनों प्रकार के शिल्पों में लिखी गई हैं। आकार की दृष्टि से छोटी भी हैं और लम्बी भी पर इन सारी कहानियों में उनके यहाँ किसी विशेष शिल्प का आरोपित आग्रह नहीं मिलता। उनकी इन कहानियों में एक ओर स्मृति के पंखों पर उड़ने वाला पूर्व

दीप्ति शिल्प है, तो दूसरी ओर संकेतों–प्रतीकों का अन्तग्रर्थित शिल्प।'' [29] मिश्र जी की कविता से कहानी में नहीं आए बल्कि कविता के साथ कहानी में आए। उनके कहानीकार रूप के साथ–साथ उनका कवि रूप भी कहीं कहीं साथ चलता हुआ दिखाई देता है। रामदरश जी ने लिखा है ''प्रायः मेरा कवि कहानीकार के साथ चलता दिखाई पड़ता है। मेरा प्रयत्न यही होता है कि वह कहानीकार के काम में दखल न दे, बल्कि उसके काम को असरदार बनाये। इसलिए जहाँ कहानी मानसिक आवर्तों से गुजरती है या जहाँ उन दृश्यों से गुजरती है जो मात्र दृश्य नहीं होते बल्कि वे कहानी की संवेदना में सांकेतिक रूप से कुछ जोड़ना चाहते हैं; वहाँ मेरा कवि उसके साथ हो लेता है और ऐसी भाषा का प्रयोग करता है। जो बिम्ब रचती है, प्रतीकात्मक और आलंकारिक होती है।'' [30] मिश्र जी की कहानियों में 'एक रात', 'खण्डहर की आवाज', 'माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियों', 'सीमा', 'एक भटकी हुई मुलाकात', में ऐसी कहानियाँ हैं जहाँ उनका कवि भी कहानीकार के साथ–साथ चलता है। मिश्र जी की भाषा संवेदना से जुड़कर चलती है। पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' के अनुसार 'यशस्वी डॉ. मिश्र का कहानी संसार भी उनके आन्तरिक दबाव का ही सृजन है, उतना ही संवेदनशील जीवंत, यथार्थ और प्रभावी। घटना और परिदृश्य के दस्तावेज से अनुभव और अनुभव से संवेदन की घुमड़न; पुनः संवेदन से भाव, विचार और संदृष्टि का 'जेनुइन' कलात्मक रूपायन।'' [31]

रामदरश मिश्र की कहानी यात्रा में गाँव और शहर साथ–साथ आते जाते रहते हैं। गाँव की कहानी शुरू होती है तो उसमें कहीं शहर चला आता है और शहर की कहानी लिखते–लिखते वे कभी गाँव की ओर लौट जाते हैं। नरेन्द्र मोहन के अनुसार ''गाँव की ओर उनके लौटने का कारण सृजनात्मक मजबूरी है। यथार्थ से पलायन या 'नास्टेल्जिया' नहीं है। यह वह जमीन है जहाँ वे खड़े हैं उनकी कहानियाँ खड़ी हैं।'' [32]

रामदरश जी अपनी कहानियों में लक्ष्य की ओर तेजी से नहीं भागते हैं बल्कि परिवेश में पूरी तरह रमते हुए आगे बढ़ते हुए दिखाई देते हैं। नरेन्द्र मोहन के शब्दों में ''रामदरश मिश्र की अधिकतर कहानियाँ परिवेश की अन्तरंग पहचान देने वाली सामाजिक स्थितियों को धीरे–धीरे खोलती चलने वाली कहानियाँ हैं। परिवेशगत स्थितियों को जिस अन्तरंगता से यहाँ खोला गया है, यह लेखकीय दृष्टि का परिणाम है जिसमें स्थितियों को उलीचन की हड़बड़ी और निर्णयों–निष्कर्षों तक पहुंचने की उतावली नहीं है।'' [33]

शिल्प की दृष्टि से कहा जा सकता है कि रामदरश जी की अधिकांश कहानियां सीधी सादी हैं और वर्णनात्मक शैली में विकास पाती हैं। इसीलिए रामदरश जी की कहानियाँ सहज एवं संश्लिष्ट हैं। नरेन्द्र मोहन के अनुसार – ''रामदरश मिश्र ने सीधी सादी कहानियाँ ही लिखी हैं सीधे सादे वर्णनात्मक शिल्प में। उनमें बड़े कथ्य को सहज ढंग से कहने की अपूर्व शक्ति है।..... रामदरश मिश्र की कहानियों में इस सहज दृष्टि का उत्कर्ष देखा जा सकता है। सादगी और सहजता उनके कथाकार के ऐसे गुण हैं जो उनकी कहानियों में सर्वत्र मिलेंगे।'' [34]

फैंटेसी शिल्प में रचित उनकी एक कहानी है 'एक इन्टरव्यू उर्फ कहानी तीन शतुरमुर्गों की। फैंटेसी के माध्यम से इस कहानी में यथार्थ की भयावहता प्रकट होती है। फैंटेसी की काल्पनिक सी अथवा अवास्तविक लगने वाली दुनिया के वास्तविक रूप को उजागर करती है। इस कहानी में कहानीकार ने ऐसे लोगों को बेनकाब किया है। जो अन्याय और शोषण के प्रतीक हैं। इस कहानी में सत्य को जानने समझने वाले लोगों की ओर भी संकेत किया गया है। मिश्र जी की कहानियों में व्यंग्य कहीं कहीं दिखाई देता है। रामदरश जी की कहानियों की प्रवृत्ति व्यंग्य की नहीं है फिर भी व्यंग्यात्मक दृष्टि से 'आधुनिक' और 'मिसफिट' कहानियाँ आकर्षक हैं। रामदरश जी की कई कहानियां बहुत लम्बी हैं वहाँ पाठक को किंचित धैर्य जरूर रखना पड़ता है किन्तु रोचकता खत्म नहीं होती। डॉ. अश्विनी पाराशर के अनुसार ''उनकी कलम जहाँ भी वर्णन की गुंजाइश देखती है, रॉ में बहने लगती है।..... .....लगता है कि पाठक कहानी नहीं उपन्यास का अंश पढ़ रहा है। यह मिश्र जी के सहज भावुक रचनाकार का निजी शिल्प है।'' [35] सम्प्रेषणीयता रामदरश जी की कहानियों की बहुत बड़ी विशेषता है वे जो भी कहना चाहते है वह पाठक को सहज समझ में आ जाता है। उनकी कहानियों के अर्थ को समझने के लिए दर्शन के सूत्रों को समझने की जरूरत नहीं होती। डॉ. उदय भानु सिंह ने कहा है ''रामदरश मिश्र की कहानियों की मुख्य विशिष्टता है – सहज प्रेषणीयता। लेखक जो कहना चाहता है उसे बड़े ही सार्थक ढंग से कहता है। कहानी कहने की कला में मिश्र जी पारंगत हैं वास्तव में कला की पराकाष्ठा भ्रम उत्पन्न करने में होती है – और वह करते हैं। बिम्ब बड़े सटीक हैं। पात्रों की घटनाओं की शिल्प की प्रभविष्णुता देखते बनती है। इन कहानियों में द्वन्द्व, तनाव एवं संघर्ष की विविध भंगिमाएं अर्थ प्रधान हैं काम प्रधान स्थितियाँ यत्किंचित ही दृष्टिगत होती हैं। लोक–जीवन के विविध रंगों के रूपायित करने वाले मुहावरे, लोकोक्तियाँ जन–भाषा के सार्थक प्रयोगों की सूचक हैं। इन कहानियों में भाषा और अभिव्यंजना की अमित शक्ति है जिससे हमारे आसपास की जिन्दगी की एक प्रामाणिक पहचान उभरकर प्रस्तुत हुई।'' [36]

अंत में कहा जा सकता है कि रामदरश मिश्र की कहानियाँ जनसामान्य से जुड़ी हुई कहानियां हैं। नरेन्द्र मोहन के शब्दों में – ''कहानियों को देखा जाये तो हम पायेंगे कि ये आज भी हमसे आ जुड़ती हैं.....कहानियों का इस तरह आज पाठक से आ जुड़ना और एक रिश्ता कायम कर लेना कहानीकार की शक्ति का परिचायक है ये कहानियाँ संवेदनात्मक धरातल पर हमें आज भी विह्वल कर जाती है।'' [37]

नई कहानी के दौर की अंतिम अवस्था में जब नागरिक जीवन के स्त्री–पुरुष सम्बन्धों पर कहानी लिखी जा रही थी, कहीं दाम्पत्य सम्बन्धों का चित्रण किया जा रहा था, कहीं प्रेम सम्बन्धों पर कहानियाँ निरन्तर लिखी जा रहीं थीं तब कहानी को एक नई दिशा की ओर मोड़ देने वाले कुछ कहानीकार ऐसे थे जिन्होंने अपनी लेखनी से गाँव को उसकी सम्पूर्णता में पकड़ा। गाँव के व्यक्ति के अभाव, दुःख–दर्द, उसकी पीड़ा, उसके संघर्ष को लेकर कहानियाँ लिखी उनमें रामदरश मिश्र भी एक ऐसा नाम है जो उस समय से आज तक अपनी लेखनी से कहानी की रचना प्रक्रिया को जीवंत ही नहीं बल्कि सशक्त बनाए हुए है। रामदरश मिश्र ने कहानी की इस रचना प्रक्रिया से गाँव की गरीबी का ही चित्राण नहीं किया बल्कि यह रेखांकित किया है कि इन असहाय गरीब लोगों का शोषण समर्थ धनवान लोग किस तरह से करते हैं, किस तरह से कतिपय लोग समाज के भीतर ही अपनी ताकत के बल पर सामाजिक, आर्थिक विषमता पैदा करते हैं। इस विषमता को दूर करना ही कहानीकार की तड़प और उद्देश्य है।

संदर्भ

1. 'साहित्य का क्या होगा?' – रामदरश मिश्र – 'प्रगतिशील आकल्प' – रामदरश मिश्र सृजन सम्मान अंक (जुलाई–दिसम्बर 2004) पृ.सं. 112
2. 'साहित्य का क्या होगा?' – रामदरश मिश्र –'प्रगतिशील आकल्प' – रामदरश मिश्र सृजन सम्मान अंक (जुलाई–दिसम्बर 2004) पृ.सं. 113
3. 'साहित्य का क्या होगा?' – रामदरश मिश्र –'प्रगतिशील आकल्प' – रामदरश मिश्र सृजन सम्मान अंक (जुलाई–दिसम्बर 2004) पृ.सं. 114
4. 'साहित्य का क्या होगा?' – रामदरश मिश्र – 'प्रगतिशील आकल्प' – रामदरश मिश्र सृजन सम्मान अंक (जुलाई–दिसम्बर 2004) पृ.सं. 114

5. 'सर्जना ही बड़ा सत्य है' – रामदरश मिश्र – 'प्रगतिशील आकल्प' – रामदरश मिश्र सृजन सम्मान अंक (जुलाई–दिसम्बर 2004) पृ.सं. 117
6. 'सर्जना ही बड़ा सत्य है' – रामदरश मिश्र– 'प्रगतिशील आकल्प' – रामदरश मिश्र सृजन सम्मान अंक (जुलाई–दिसम्बर 2004) पृ.सं. 117
7. 'मेरी कहानी रचना' भूमिका – रामदरश मिश्र रचनावली 3 – सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृष्ठ सं. VII
8. 'मेरी कहानी रचना' भूमिका – रामदरश मिश्र रचनावली 3 – सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृष्ठ सं. VIII
9. 'इकसठ कहानियाँ' भूमिका – रामदरश मिश्र पृष्ठ सं. 19
10. 'मेरी कहानी रचना' भूमिका – रामदरश मिश्र रचनावली 3 – सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृष्ठ सं. VI
11. 'मानवीय संवेदनाओं को उकेरती कहानियाँ – सुरेन्द्र तिवारी – रामदरश मिश्र : व्यक्ति और अभिव्यक्ति– सं. जगन सिंह एवं स्मिता मिश्र पृ. 179
12. 'मेरी कहानी रचना' भूमिका – रामदरश मिश्र रचनावली 3 – सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृष्ठ सं. VIII
13. 'मानवीय संवेदनाओं को उकेरती कहानियाँ' – सुरेन्द्र तिवारी – रामदरश मिश्र : व्यक्ति और अभिव्यक्ति – सं. जगन सिंह एवं स्मिता मिश्र पृ. 181
14. 'मेरी कहानी रचना' भूमिका – रामदरश मिश्र रचनावली 3 – सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृष्ठ सं. VIII
15. 'मेरी कहानी रचना' भूमिका – रामदरश मिश्र रचनावली 3 – सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृष्ठ सं. IX
16. 'रामदरश मिश्र की कथा यात्रा' – डॉ. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव – रचनाकार रामदरश मिश्र– सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 322
17. 'रचनाधर्मिता के सन्दर्भ में – डॉ. आनन्द प्रकाश – रचनाकार रामदरश मिश्र – सं. सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 83
18. 'मेरी कहानी रचना' भूमिका – रामदरश मिश्र रचनावली 3 – सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृष्ठ सं. XII
19. 19ण कथाकार रामदरश मिश्र – डॉ. सूर्यदीन यादव पृ. 11
20. रामदरश मिश्र की कथा यात्रा–डॉ. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव – रचनाकार रामदरश मिश्र – सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 321
21. 'रामदरश मिश्र की कथा यात्रा' – डॉ. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव – रचनाकार रामदरश मिश्र – सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 317
22. 'विकल्प'– विशेषांक मई 1967 पृ. 167
23. 23. 'रामदरश मिश्र की कथा यात्रा' – डॉ. गिरीश चन्द्र – श्रीवास्तव रचनाकार रामदरश मिश्र – सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 325
24. 'सारिका' अगस्त 1981 पृ. 10
25. 'रचनाधर्मिता के संदर्भ में' डॉ. विनय – रचनाकार रामदरश मिश्र – सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 83
26. 'मेरी कहानी रचना' भूमिका – रामदरश मिश्र रचनावली 3 – सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृष्ठ सं. VII
27. 'मेरी कहानी रचना' भूमिका – रामदरश मिश्र रचनावली 3 – सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृष्ठ सं. XI
28. 'मानवीय संवेदनाओं को उकेरती कहानियाँ'–सुरेन्द्र तिवारी –रामदरश मिश्रः व्यक्ति और अभिव्यक्ति – सं. जगन सिंह एवं स्मिता मिश्र पृ. 186
29. 'सहज कहानी' का संवेदन सिद्ध संसार – पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु– रामदरश मिश्रः व्यक्ति और अभिव्यक्ति – सं. जगन सिंह एवं स्मिता मिश्र 191
30. 'मेरी कहानी रचना' भूमिका – रामदरश मिश्र रचनावली 3 – सं. रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र पृ. XII
31. 'सहज कहानी' का संवेदन सिद्ध संसार' – पाण्डेय शाशिभूषण शीतांशु– रामदरश मिश्रः व्यक्ति और अभिव्यक्ति– सं. जगन सिंह एवं स्मिता मिश्र 191
32. 'संवेदना और निर्णय के द्वन्द्व की कहानियाँ' नरेन्द्र मोहन – रचनाकार रामदरश मिश्र– सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 310
33. 'संवेदना और निर्णय के द्वन्द्व की कहानियाँ' नरेन्द्र मोहन – रचनाकार रामदरश मिश्र– सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 310
34. 'संवेदना और निर्णय के द्वन्द्व की कहानियाँ' नरेन्द्र मोहन – रचनाकार रामदरश मिश्र– सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 339
35. 'रामदरश मिश्र की लम्बी कहानियाँ' – डॉ. अश्विनी पराशर – रचनाकार रामदरश मिश्र – सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 339
36. रचनाधर्मिता के संदर्भ में – डॉ. उदयभानु सिंह – रचनाकार रामदरश मिश्र – सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 82
37. 'संवेदना और निर्णय के द्वन्द्व की कहानियाँ' नरेन्द्र मोहन – रचनाकार रामदरश मिश्र– सं. नित्यानंद तिवारी एवं ज्ञानचन्द गुप्त पृ. 310